इण्डियन
थिऑसफिस्ट

जुलाई 2025 खण्ड 123 अंक 7

विषयवस्तु

एक कदम आगे 5—6
प्रदीप एच. गोहिल

निर्वाणिक चेतना की दहलीज पार करने पर प्रवृत्तियों में परिवर्तन 7—15
श्याम सिंह गौतम

पारसी धर्म 16—25
अबान पटेल

समाचार और टिप्पणियां 26—34

सम्पादक प्रदीप एच गोहिल
अनुवादक श्याम सिंह गौतम

थिऑसफिकल सोसायटी ऐसे शिक्षार्थियों से मिल कर बनी है जो संसार के किसी भी धर्म से संबंध रखते हैं या फिर संसार के किसी भी धर्म से सम्बन्ध नहीं रखते हैं, और जो सोसायटी के उद्देश्यों के अनुमोदन के कारण सोसायटी से जुड़े हुये हैं, धार्मिक विरोधों को दूर करने और अच्छी मानसिकता वाले लोगों को एकत्रित करते हैं जिनकी धार्मिक धारणा कुछ भी क्यों न हो, या जिनकी आकांक्षा धार्मिक सत्य को जानने, और अपने अध्ययन के परिणामों को दूसरों से साझा करना चाहते हैं। उनके एकत्व का बंधन कोई समान विश्वास का व्यवसाय नहीं है बल्कि समान खोज और सत्य तक पहुंचने की आकांक्षा है। वे मानते हैं कि सत्य को अध्ययन, मनन, जीवन की पवित्रता, उच्च आदर्शों के प्रति उनकी श्रद्धा, और जो सत्य को ऐसा पारितोषिक मानते हैं जिसके लिये प्रयास किया जाना चाहिये, न कि ऐसी रूढ़ि जो अधिकार से लागू की जाये। वे मानते हैं कि विश्वास व्यक्तिगत अध्ययन और स्फुरणा का परिणाम है न कि उससे सम्बन्धित किसी वस्तु से, और उसका आधार ज्ञान होना चाहिये न कि मान्यता। वे सभी के प्रति सहिष्णु होते हैं, यहां तक कि असहिष्णु के प्रति भी, किसी विशेषाधिकार के रूप में नहीं बल्कि कर्तव्य के रूप में और वे अज्ञान को मिटाना चाहते हैं, उन्हें दंड दे कर नहीं। वे सभी धर्मों को दैवी प्रज्ञान की अभिव्यक्ति के रूप में मानते हैं, और इनका तिरस्कार और धर्म परिवर्तन को नहीं उनके अध्ययन को वरीयता देते हैं। शांति के प्रति वे सतर्क हैं, जैसे सत्य उनका लक्ष्य है।

थिऑसफी ऐसे सत्यों का संग्रह है जो सभी धर्मों का आधार बनाती है, और कोई इस पर अपने व्यक्तिगत अधिकार का दावा नहीं कर सकता है। यह ऐसा दर्शन प्रस्तुत करती है जो जीवन की समझ प्रदान करता है और जो न्याय और प्रेम को दर्शाता है, जो विकास का मार्गदर्शन करता है। यह मृत्यु को उसके उचित स्थान पर रखती है, जो अनन्त जीवनों में पुनरावृत्ति करने वाली क्रिया है, और एक अधिक पूर्ण और अधिक प्रकाशमान अस्तित्व है, यह संसार में अध्यात्म—विज्ञान को पुनर्प्रतिष्ठित करती है, मनुष्य को शिक्षा देती है कि वह स्वयं आत्मा है और मन और शरीर उसके सेवक हैं। यह ग्रन्थों और धार्मिक सिद्धांतों के गूढ़ अर्थों को प्रकाशित करती है और इस प्रकार मेधापूर्वक उनकी पुष्टि करती है क्यों कि वे स्फुरणा की दृष्टि में सदैव उचित हैं।

थिऑसफिकल सोसायटी के सदस्य इन सत्यों का अध्ययन करते हैं और थिऑसफिस्ट उन्हें अपने जीवन में उतारते हैं। ऐसा प्रत्येक व्यक्ति जो अध्ययन करना चाहता है, सहिष्णु होना चाहता है, जिसका लक्ष्य उच्च है और पूरी शक्ति से कार्य करना चाहता है, उसका सदस्य के रूप में स्वागत है, और उसका सच्चा थिऑसफिस्ट बन जाना उसी पर निर्भर करता है।

प्रदीप एच. गोहिल

आगे का एक कदम

हममें से अधिकांश लोग जानते हैं कि मन दो तरह का होता है। पवित्र मन या सात्विक मन (शुद्ध मन) और अशुद्ध मन या सहज मन या काम–मन जैसा कि इसे कहा जाता है। उपनिषदिक शिक्षा के अनुसार ये दो तरह के मन हैं। एक उच्च मन है जो सत्व (पवित्रता) से भरा है। दूसरा निम्न मन है जो वासना से भरा है। यदि कोई ध्यान करना चाहता है तो उसे इसे केवल सात्विक मन बनाने का प्रयास करना होगा। उच्च या सात्विक मन के माध्यम से ही व्यक्ति को वासनाओं और भावनाओं के निम्न या सहज मन को नियंत्रित करना होगा।

अब हम देखते हैं कि मन को कैसे शुद्ध किया जाए। जैसे एक लोहा दूसरे लोहे को आकार देता है, वैसे ही पुण्य मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति का शुद्ध मन अपने अशुद्ध मन को सुधारता और ढालता है। जैसे हम सोने को पिघलाकर अशुद्धियाँ अलग करते हैं, वैसे ही सत्य, पुण्य और शुद्ध कर्म तथा निरंतर सत्संग से मन सदा शुद्ध होता है। सत्य बोलना और दया का अभ्यास मन को शुद्ध करने वाले बहुत बड़े साधन हैं। सभी उच्च आकांक्षाएँ, सर्वव्यापी प्रवृत्तियाँ और दया – ये सभी मन की सात्विक सामग्री को बढ़ाने में बहुत सहायक होते हैं। उच्चतर मनस का विकास होता है।

त्याग, दान, करुणा, थिऑसफिकल साहित्य का अध्ययन और सत्य बोलना मन को शुद्ध करने की पाँच विधियां हैं। छठी विधि है अच्छी तरह से किया गया तप। यह बहुत शुद्ध करने वाली विधि है। इसी तरह पवित्र स्थानों की तीर्थ यात्रा भी शुद्ध करने वाली है। वहाँ व्यक्ति पवित्र व्यक्तियों के संपर्क में आता है और उसे अच्छा सत्संग भी मिलता है।

दान, जप, निष्काम कर्म, यज्ञ, अग्निहोत्र, ब्रह्मचर्य, संध्या, तीर्थयात्रा, दम, सम, यम, नियम, स्वाध्याय, तप, व्रत, साधु–सेवा – ये सभी मन को शुद्ध करने वाले हैं। इस प्रकार शुद्ध हुए मन में निस्संदेह परमानंद होगा। मंत्र मन को शुद्ध करता है। मंत्र को तोते की तरह जपने मात्र से बहुत कम प्रभाव पड़ता है। हां, इससे कुछ लाभ अवश्य होता है। अद्भुत प्रभाव उत्पन्न करने के लिए इसे भावपूर्वक जपना चाहिए। मंत्र, जब तक अपने मन की प्रबल इच्छा–शक्ति से प्रेरित न हो, तब तक अधिक प्रभाव उत्पन्न नहीं कर सकता।

दार्शनिक साहित्य का अध्ययन, सही सोच, अच्छे और श्रेष्ठ भावों का अभ्यास, प्रार्थना और परोपकारी प्रयास और सबसे बढ़कर नियमित और कठोर ध्यान मन को सुधारने के साधन हैं। इससे मन का तीव्र विकास होगा। जब मन शुद्ध हो जाता है, तो उसके मध्य में एक छिद्र बन जाता है, जिसके माध्यम से जीवात्मा से पवित्रता, प्रकाश और ज्ञान प्रवाहित होता है।

स्वर्णकार 10 कैरेट सोने को 15 कैरेट सोने में बदल देता है, इसके लिए उसे तेजाब डालकर और उसे कई बार क्रुसिबिल में जलाकर तैयार कर लेता है। फिर भी, उसे अपने मन को शुद्ध करना होगा, जिसमें बुद्धि के स्थान पर इंद्रियां प्रभावित होंगी। उसे भगवान के वचनों, उपनिषदों, ध्यान, जप या अपने इष्ट देवता के मौन जप पर ध्यान और चिंतन करना होगा। मन की शुद्धि के परिणामस्वरूप, वह अधिक संवेदनशील हो जाता है, किसी ध्वनि या झटके से आसानी से विचलित हो जाता है और किसी भी दबाव को तीव्रता से प्रतीत करता है।

साधक को संवेदनशील होना चाहिए और साथ ही शरीर और तंत्रिकाओं को पूरी तरह से अपने नियंत्रण में रखना चाहिए। संवेदनशीलता जितनी अधिक होगी, कार्य उतना ही कठिन होगा। ऐसी कई ध्वनियां हैं जो एक साधारण व्यक्ति के लिए अनसुनी हो जाती हैं, लेकिन वे एक बहुत संवेदनशील व्यक्ति के लिए यातना हैं। इस अतिसंवेदनशीलता पर नियंत्रण पाने के लिए व्यक्ति को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना चाहिए।

मन की शुद्धि योग का पहला भाग है। शुद्धि के बाद मन की स्वाभाविक प्रवृत्ति मुक्ति या मोक्ष की ओर जाने की होती है। यदि किसी शिष्य का मन सभी अशुद्धियों से मुक्त हो चुका हो, तब उसे गुरु द्वारा पवित्र रहस्यों में दीक्षित किया जाए, तो उसका मन पूर्णतः निष्क्रियता या सुप्तावस्था में आ सकता है। इसलिए मन की शुद्धि निर्विकल्प अवस्था में प्रवेश करने की दिशा में एक आगे का कदम है।

———————

श्याम सिंह गौतम

निर्वाणिक चेतना की दहलीज पार करने पर प्रवृत्तियों में परिवर्तन

डॉ. जीएस अरंडेल एक ऐसे थियोसोफिस्ट थे, जिन्होंने अपने जीवन में ही वह दीक्षा प्राप्त कर ली थी, जिसके माध्यम से उन्होंने निर्वाण की दहलीज पार की। यद्यपि उनका मानना था कि निर्वाण के अनुभवों को भौतिक लोकों के शब्दों में समझाना असंभव है। लेकिन वे संसार को निर्वाण के बारे में कम से कम उतना बताने के लिए अधीर थे, जो वे बता और समझा सकते थे। तो यह एक असंभव को संभव में बदलने का प्रयास था। आमतौर पर आध्यात्मिक पथ पर चलने वाला यात्री सांसारिक आकर्षणों को एक–एक करके अलौकिक पहलुओं से बदल देता है, किन्तु डॉ. अरंडेल के जीवन में निर्वाणिक चेतना की दहलीज पार करते ही उनके दृष्टिकोण में कुछ परिवर्तन आ गए। उन्होंने अपने अनुभवों को अपनी छोटी सी पुस्तक ''निर्वाण'' में प्रस्तुत किया है। वर्तमान लेख में निर्वाण का अनुभव प्राप्त लोगों के दृष्टिकोण में ऐसे परिवर्तनों के कुछ पहलुओं पर चर्चा करने का प्रयास किया गया है।

यद्यपि, उन्होंने अपनी पुस्तक ''निर्वाण'' में 'निर्वाण के खतरे' शीर्षक के अध्याय में उल्लेख करके चेतावनी दी है कि निर्वाण दर्शन के बाद कमजोरियाँ होना खतरनाक है। उन्हें प्रतीत होता है कि यदि वह निर्वाण लोक में प्रत्येक क्षण सावधान नहीं रहे तो उसे भयानक आपदा का सामना करना पड़ सकता है। कुछ कमजोरियाँ तुलनात्मक रूप से दूसरों की तुलना में अधिक खतरनाक हैं, ऐसी कमजोरियाँ हैं– दंभी होना, क्रोधित और चिड़चिड़ा होना, अतिशयोक्ति करना, झूठ बोलना, गलत समझना, किसी को गलत बताना, निर्दयी या विनाशकारी रूप से आलोचनात्मक होना, निम्न पूर्वाग्रह और अंधविश्वास रखना; जैसे, उदाहरण के लिए, कि ईश्वर भयानक है, बदला लेता है, उससे डरना चाहिए, उसे सदा के लिए दंडित करना चाहिए, उसे केवल एक निश्चित चैनल या कुछ विशिष्ट हठधर्मिता या सिद्धांतों में विश्वास के माध्यम से ही पहुँचा जा सकता है।

जैसे–जैसे समय बीतता है, छोटी–छोटी गड़बड़ियाँ अधिक से अधिक

1. चोहान लॉज, कानपुर, यूपी और यूके फेडरेशन के अध्यक्ष और थिऑसफिकल सोसायटी के भारतीय सेक्शन के राष्ट्रीय वक्ता।

प्रभाव उत्पन्न करती हैं। एक छोटा सा धक्का एक बड़ा झटका देता है – एक खतरनाक झटका, यदि धक्का गलत दिशा में हो। बाहरी दुनिया के संपर्कों को बनाए रखना और बढ़ाना खतरनाक है। एकांत स्थानों पर चले जाना अधिक आसान है ताकि बाहरी घटनाएँ जो आपकी परेशानियों को बढ़ावा देती हैं, वे समाप्त हो जाएँ।

सभी वस्तुओं में दिव्यता की भावना

पहला प्रभाव यह हुआ कि सभी सजीव और निर्जीव वस्तुओं के प्रति उसका आदर बढ़ गया। अब उसे स्पष्ट रूप से ज्ञात हो गया कि प्रत्येक वस्तु गतिशील है। वह नहीं जानता था कि समुद्र तट पर धूल के कण और वहाँ के छोटे–छोटे कीड़े–मकौड़े भी सर्वशक्तिमान से युक्त हैं। किसी भी वस्तु को छूने पर उन्हें ऐसा लगता था कि वह ईश्वर को छू रहे हैं। इसलिए अब वह प्रत्येक वस्तु को सावधानी से उठाते थे और सभी प्रकार की शरारतों से उन्हें घृणा हो गई। यहाँ तक कि जिस फाउंटेन पेन से वह लिखते थे, वह भी उसे दिव्य प्रतीत होता था। यदि वह उससे सावधानी और सुंदरता से नहीं लिखते थे, तो उन्हें लगता था कि पेन को बुरा लग रहा होगा। धीरे–धीरे उनके आस–पास की सभी वस्तुओं के प्रति बंधन का संबंध स्थापित हो गया। उन्हें लगा कि उसके कार्यालय की सभी वस्तुएँ उनकी ओर इस दृष्टि से देखती हैं कि वे उसका उचित रख–रखाव और गृह–व्यवस्था का ध्यान रखें। तब उन्हें समझ में आया कि यह सब शायद उनके इस सत्य के बोध के कारण हुआ है कि निर्वाणिक तल में वह संसार के सभी लोगों और सभी वस्तुओं को अपने में समाहित करता है।

परिधि रहित वृत्त

वहां पहुंचने के बाद पहली बार यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सभी व्यक्ति और सभी वस्तुयें केवल केंद्र हैं और उनकी कोई परिधि नहीं है। जिस तरह हमारे पास लिखने के लिए पूरा पेज है, लेकिन अपनी सुविधा के लिए हम रेखाएं बना लेते हैं, उसी तरह हमने नीचे के संसार में सीमाएं बना ली हैं। निर्वाण में हम संसार के किसी भी स्थान पर किसी भी व्यक्ति पर काम कर सकते हैं। डॉ. अरंडेल सर्वज्ञता के अपने पहले अनुभव का वर्णन करते हैं –

''कई वर्ष पहले, 1912 में सिसिली के ताओरमिना में मुझे मौलिक एकता की पहली झलक मिली थी। मुझे याद है कि मैं होटल में अपने कमरे की

खिड़की पर बैठा था जिसमें हम में से एक व्यक्ति ठहरा हुआ था और मैं बेसुध होकर सपने देख रहा था। अचानक मेरी आधी–अधूरी नींद से बोझिल आँखें छोटी सी घाटी में संतरे के बाग पर नीचे टिक गईं, और मैंने खुद को, आश्चर्यजनक रूप से, संतरे के पेड़ों के साथ, उनके जीवन और अस्तित्व के साथ अपनें को पहचान रहा था। मैं अपनी खिड़की पर था, फिर भी मैं संतरे के बाग में भी था – वास्तव में, मैं संतरे का बाग था। यह लगभग ऐसा था जैसे मेरी चेतना जॉर्ज अरंडेल के रूप में जॉर्ज अरंडेल और संतरे के बाग के रूप में बीच झिलमिला रही थी। मैं दो इकाईयाँ था, फिर भी एक। और जब मैं संतरे के बाग के रूप में रह रहा था, एक माली आया और उसने कुछ संतरे तोड़ना और कुछ शाखाएँ काटना प्रारम्भ कर दिया। ये सब कार्य माली मेरे साथ कर रहा था। मैंने विद्रोह नहीं किया जैसा कि जॉर्ज अरंडेल विद्रोह कर सकते थे, न ही अपने दिमाग और अपनी इच्छा से, बल्कि जैसे संतरे के बाग विद्रोह करते हैं। मैं असुविधा, हानि, दर्द के बारे में नहीं बल्कि उसके बगल में कुछ होने के बारे में सचेत था। मैं इसलिए और भी असहज हो गया क्योंकि माली ने मेरे साथ आदर या स्नेह से आचरण नहीं किया, बल्कि ऐसा व्यवहार किया जैसे मैं कोई निर्जीव प्राणी हूँ, जिसमें कोई भावना नहीं है, जिसमें संवेदना की कोई क्षमता नहीं है। वह यह क्यों नहीं समझ पाया कि हम दोनों में एक ही जीवन है? अगर उसका रवैया सिर्फ इतना होता कि वह मुझसे अनुमति माँगता, अपने कामों के लिए मुझसे माफी माँगता, मुझे बताता कि मैं दूसरों के साथ खुद को बाँटकर उन्हें खुश कर सकता हूँ, तो मुझे इतना बुरा नहीं लगता। लेकिन वह निर्दयी, स्वार्थी था और संतरे के बाग को अपना साथी मानने के स्थान पर अपना दास समझता था। जब भी वह संतरा तोड़ता या शाखा काटता तो मुझे चोट पहुँचाता था। अगर उसका रवैया अलग होता तो शायद वह मेरे सारे संतरे, सारी शाखाएँ ले लेता और हम साथ मिलकर खुशियाँ मनाते क्योंकि हम साथ मिलकर काम कर सकते थे। वैसे भी, उसकी दया पर और उसकी संपत्ति की तरह व्यवहार किए जाने के कारण, जीवन जीने लायक था और मैं एक बेचारा संतरे का बाग था क्योंकि मेरी देखभाल नहीं की जाती थी।

''वनस्पति जगत में चेतना के इस अनुभव ने मेरी आँखों के सामने चेतना के विभिन्न स्तरों पर एक पूरी तरह से नई अवधारणा खोली, और सर्वव्यापी एकता के निहितार्थों का आभास भी कराया। तब से मैं कभी भी वैसा नहीं रहा। मैं कभी भी फूल नहीं तोड़ पाया, या यहाँ तक कि खरपतवार को भी नहीं उखाड़ पाया, बिना चुपचाप पौधे या खरपतवार को अपने कारण बताए,

किसी निश्चित, मैं आवश्यक नहीं कहूँगा कि बड़े, अच्छे के लिए बलिदान का अनुरोध किए बिना। और मुझे कभी भी सहयोग की कमी नहीं मिली।'' 1

सूर्य जीवन का स्रोत है

उन्हें लगा कि सूक्ष्म लोकों में सूर्य ही संसार में जीवन का स्रोत है। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति सूर्य में ही है और सूर्य ही समस्त जीवन का स्रोत है क्योंकि हमारे शरीर के सभी अंग उनके अस्तित्व में ही हैं। उनकी किरणों से समस्त संसार बंध रहे हैं। हम सबका मूल स्वभाव सूर्य की तरह अपने माध्यम से चमकना है।

व्यक्ति अनंत है और उस अनंत तक पहुँचने में किसी में कोई कमी नहीं है। ऐसा लगता है कि निर्वाण चेतना धीरे–धीरे पूरे संसार में फैल रही है। उसे स्वतः ही समझ आ गया था कि भविष्य में अनंत दूरी पर उनका शरीर सूर्य जैसा होगा और उनका साम्राज्य पूरा संसार होगा।

बाहरी संसार हम सब छोटे सूर्यों की पूर्णता के आश्वासन का मूर्त रूप है। सर्वशक्तिमान सूर्य से पहले और भी भव्य सूर्य हैं। वे इस स्थिति तक पहुँच चुके हैं जो बहुत सूक्ष्म है और ऊपर और ऊपर और अनन्त तक जाते हैं।

सूर्य हमारे अंदर गुणित हो रहा है। उसके बड़े भाग में ऐसा कोई कार्य नहीं है जो उसके सूक्ष्म भाग में न घटित होता हो।

सर्वशक्तिमानता का विकास

उन्हें उत्साहपूर्वक लगा कि वे गर्भगृह में हैं और जो कुछ भी उसके बाहर है वह उसके साथ निरंतर संपर्क में है। उसे उत्साहपूर्वक लगा कि वह एक ऐसे स्थान पर है जहाँ देश और काल का कोई अस्तित्व नहीं है। वे जिससे भी संपर्क करना चाहते थे, उससे संपर्क कर लेते थे। ध्यान की प्रक्रिया अपने आप संपर्क बनाती है। वह स्वर्ग के बारे में अपने विश्वास के सभी आयामों को उतना नहीं समझ पाये, जितना उन्होंने सोचा था। उन्होंने पाया कि यह कोई स्थान नहीं बल्कि चेतना की एक अवस्था है। निर्वाण भी एक स्वर्ग है जो उच्च मानस जगत के स्वर्ग से भी अधिक शाश्वत है। निर्वाण में इस छोटे से प्रवास के बाद उन्होंने देखा कि उसके अंदर बहुत सी शक्तियाँ अपने आप काम कर रही हैं, जबकि केवल एक शक्ति सक्रिय थी, और वह भी केवल उसके एक भाग के साथ।

अस्तित्व के प्रत्येक भाग का पुनर्जन्म

निर्वाणिक चेतना के जागरण का अर्थ है कि उसके अस्तित्व का भाग ऊपर उठ गया है। प्रत्येक अंग और स्तर में कुछ न कुछ शुद्धि होती है। इतना ही नहीं, यह भी सत्य है कि समस्त विश्व की चेतना में उत्थान होता हुआ प्रतीत हो रहा था। और अपने छोटे से छोटे भाग में भी अपेक्षाकृत अधिक चमक, एकता और विस्तार होता हुआ प्रतीत हो रहा था। बाहर से भिन्न दिखने वाली वस्तुएं भिन्नता से संबंधित हैं। यही कारण है कि विश्व के किसी भाग की सेवा करने से भी समस्त विश्व में परिवर्तन होता है।

अपने काम से काम रखना

निर्वाणिक चेतना में 'अपने काम से काम' उक्ति भिन्न अर्थ लेकर निकल रही थी। समस्त विश्व को वह सारा संसार दिखाई दे रहा था, जिसमें वे भगवान सूर्य के एक क्षुद्र प्रतिनिधि प्रतीत हो रहे थे। वे अपने प्रयत्नों का प्रभाव समस्त विश्व में फैलाते हुए प्रतीत हो रहे थे। उन्होंने कहा है कि उनका कर्तव्य उस समय अपने आस–पास के एक या दो संसारों की सहायता करना होगा। वर्तमान स्थिति में उन्हें उनके कार्यों की चिंता नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उन्हें अभी उनके बारे में लगभग कुछ भी पता नहीं था। इसीलिए हमारा मुख्य और निष्काम कार्य संसार के लिए होना चाहिए, पवित्रता और चमक के साथ, ताकि यह अन्य संसारों के लिए भी आनंदमय स्थान बन सके।

विश्व की छवि निर्वाण

जैसे–जैसे मनुष्य का केंद्र निर्वाण की ओर बढ़ता है, उसे लगता है कि संसार का प्रत्येक आयाम उसकी निर्वाण प्रतिकृति के बराबर है। और अंत में वह इस इच्छा पर पहुँचता है कि संसार में या बाहर ऐसा कुछ भी नहीं है जो निर्वाण का प्रतिबिंब न हो। निर्वाण में व्यक्तिपरक निचले क्षेत्रों में वस्तुनिष्ठ हो जाता है। नीचे का प्रत्येक लोक निर्वाण से प्रारम्भ होता है और उसके सभी लोकों के प्रतिबिंब वहां प्रतिबिंबित होते हैं।

शब्दों के मूल्य में अंतर

निर्वाणिक चेतना के अनुभव के बाद, 'शब्दकोश' एक नई पुस्तक बन जाती है, क्योंकि इसके प्रत्येक शब्द का एक नया अर्थ लगता है। प्रत्येक शब्द एक शक्ति नहीं लगता। शब्द मुख पर प्रस्फुटित होनें वाले परमाणु प्रतीत होते

हैं। शब्द की एक आंतरिक शक्ति होती है जो संदेशवाहक की तरह संदेश देती है। कुछ शब्दों में सहायता करने की शक्ति होती है और कुछ शब्दों में हानि पहुँचाने की शक्ति होती है।

इस अनुभव के बाद, अनजाने में प्रयोग किए गए शब्द व्यक्ति को अत्यधिक चुभते हैं। जो लोग शब्दों के प्रभाव को नहीं जानते उनके लिए यह क्षम्य होना चाहिए, लेकिन अगर हम शब्दों के प्रभाव को जान गए हैं, तो उनके लिए यह कभी क्षम्य नहीं है। ऐसे शब्दों के प्रभाव को रोकने के लिए श्रोता को शक्ति का प्रयोग करना पड़ता है। निर्वाण चेतना के बाद कहा गया प्रत्येक शब्द अधिक प्रभावी हो जाता है। प्रत्येक शरीर अधिक प्रभावी, अधिक सार्थक हो जाता है। इस अनुभव के बाद प्रत्येक शब्द का अर्थ अधिक व्यापक हो जाता है। वे अपने शब्द बनाते हैं और जब वे दूसरों के मुंह से निकलते हैं, तो वे बहुत समृद्ध लगते हैं।

जीवन में परिवर्तन

जो लोग थियोसोफिकल शिक्षाओं की ओर आकर्षित होते हैं, वे अपने उच्चतम नैतिक मानक के अनुसार जीने का प्रयास करते हैं, न कि उस पारंपरिक मानक के अनुसार जो हमेशा सर्वोच्च से नीचे होता है। निर्वाण प्राप्त व्यक्ति अपनी आवश्यकता के अनुसार महान शक्ति के साथ ऊपर उठता है। वे नैतिक मानक जो अब तक पर्याप्त लगते थे, निर्वाण अनुभव के बाद अपर्याप्त लगते हैं। उसके पहले के संसार की परंपराएँ अब नए जीवन की परंपराएँ नहीं हैं, और उन्हें उनके अनुसार बदलना पड़ता है। उदाहरण के लिए, किसी देश के सम्राट में परिवर्तन सभी परंपराओं और गतिविधियों को बदल सकता है। संभवतः जीवन का कोई ऐसा वर्णन नहीं है जो इस निर्वाण दर्शन के साथ नहीं बदलता है। संबंधों में परिवर्तन अब वे बड़ों और छोटी पीढ़ियों के बराबर लगते हैं। जो पहले असंगत नहीं लगते थे, अब वे उन्हें प्रभावित करने में असमर्थ हैं। जिन लोगों की टिप्पणियों ने उन्हें क्रोधित किया था, निर्वाण अनुभव के बाद, वे उन्हें क्रोधित करने में सक्षम नहीं हैं।

लोगों की सहायता करने का स्थान

निर्वाण की अवस्था में पहुँचने के बाद व्यक्ति को यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि यदि वह समाज के प्रति जागृत नहीं हुआ तो निर्वाण चेतना प्राप्त करने का कोई लाभ नहीं है। लोगों से एकीकरण की सीमा और उसके माप में बहुत वृद्धि होती है। यदि एकीकरण में वृद्धि नहीं होती है तो निर्वाण

प्राप्त करने का कोई लाभ नहीं है। संसार के व्यक्ति के निर्वाण में, पूरे संसार में अच्छाई की ओर परिवर्तन आता है। सभी वस्तुओं के प्रति व्यक्ति का दृष्टिकोण बदल जाता है। निर्वाण के बाद, उसने कभी भी उस तरह नहीं देखा था जिस प्रकार से संसार देखता है।

पुस्तकों के मूल्यों में परिवर्तन

जैसे–जैसे पुस्तकों के नए संस्करणों में कुछ सुधार किए जाते हैं, वैसे–वैसे चेतना में सुधार के कारण पुस्तकों का महत्व भी बदल जाता है। जो पुस्तकें पहले महत्वपूर्ण लगती थीं, वे बाद में निरर्थक लगने लगती हैं। प्रत्येक पुस्तक अपने लेखक की बात करती है। किसी में संवेदनशील शक्ति होती है तो किसी में धुँधली और वस्तुनिष्ठता। प्रत्येक पुस्तक एक संगीत है, किसी का संगीत मधुर और सुरीला होता है तो किसी का कुरूप। अब पुस्तकें सजीव प्रतीत होती हैं। वास्तव में, लेखक का प्रकाश उसकी पुस्तक के माध्यम से चमकता है। कमरे में एक उचित रूप से बनाए रखा गया पुस्तकालय उस स्थान का एक महत्वपूर्ण और शक्तिशाली घटक है।

धार्मिक समारोह

निर्वाणिक अनुभव के बाद, डॉ. अरंडेल ने ऑस्ट्रेलिया में सिडनी के सेंट एल्बन चर्च में 'होली यूकारस्ट' कार्यक्रम में भाग लिया और उसमें एक असाधारण परिवर्तन पाया। यह कार्यक्रम इतना प्रभावी था जैसा उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। जब उन्होंने इसके कारणों की खोज की, तो पाया कि यह उनकी निर्वाणिक चेतना के जागरण के कारण था। उन्हें लगा कि यह महान यज्ञ सभी लोकों में हर समय हो रहा है।

छवियों की स्पष्टता

निर्वाणिक चेतना की स्थिति में पहुँच जाने पर, छवियों में स्पष्टता आ जाती है। यद्यपि भौतिक जीवन एक स्वप्न प्रतीत होता है, लेकिन बाह्य जगत एक वास्तविकता प्रतीत होती है। सघनतम पदार्थ और अत्यंत सूक्ष्म और शुद्ध पदार्थ के बीच का अंतर केवल आत्म–चेतना के अस्तित्व के कारण है। यह सच है कि भौतिक जगत एक दिव्य और ईर्ष्यापूर्ण सपना है। हमें इसमें काम करते हुए खुश होना चाहिए क्योंकि आभूषण के सपने को वास्तविकता में बदलने में खुशी है। जब कोई खिड़की से बाहर देखता है, तो उसे लगता है कि मनुष्य का असली घर इस दुनिया में भौतिक घर से अनंत गुना अधिक सुंदर है। विचारों

की शक्ति में वृद्धि यद्यपि, इस सबका एक दूसरा पहलू भी है। यदि यह चेतना अपने साथ ऐसी अद्भुत बढ़ी हुई शक्ति, आनंद में अमरता की ऐसी निश्चितता लाती है, तो यह बहुत अधिक जिम्मेदारी भी लाती है। यह एक नया और उच्च जीवन देता है, लेकिन व्यक्ति को उस जीवन के अनुरूप जीना चाहिए; नीचे गिरने के लिए वह स्तर, चाहे थोड़ा सा ही क्यों न हो, बहुत गंभीर मामला है। डॉ. अरुंडेल अपने जीवन की घटनाओं से एक उदाहरण देते हैं। वे लिखते हैं–

''उदाहरण के लिए, मुझे एक ऐसा अनुभव हुआ है जो मुझे लगता है कि इस पुस्तक में दर्ज करने योग्य है। दूसरे दिन, जब कुछ समय के लिए वस्तुयें कुछ गड़बड़ हो रही थीं, या शायद मैं खुद थोड़ा असावधान था, मुझे लगा – मुझे यह कहते हुए शर्म आ रही है – कुछ हद तक चिड़चिड़ापन, और मुझे डर है कि मैंने अपने एक या दो सहकर्मियों के सामने अपनी चिड़चिड़ाहट व्यक्त की। यह भावना हल्की थी, और लगभग तुरंत ही चली गई; किन्तु इसका प्रभाव वास्तव में बहुत असाधारण था। सभी इरादों और उद्देश्यों के लिए, दिन के बाकी समय में प्रभावी काम करना असंभव हो गया। मैंने काम किया; मैंने नियमित कर्तव्यों का पालन किया; किन्तु उत्साह गायब था। जिस क्षण मैंने कमजोरी से चिड़चिड़ेपन को प्रवेश करने दिया, शांति चली गई, और मुझे तुरंत पता चला कि मैंने एक गंभीर गलती की है। चिड़चिड़ापन केवल सतही था; यह निश्चित रूप से गहराई में नहीं था; फिर भी सतह की अशांति ने पूरी व्यवस्था को झकझोर दिया, और मुझे उस समय के लिए नए राज्य से बाहर कर दिया, जिसमें मैं अब तक सफलतापूर्वक था। मेरा प्रत्येक शरीर, चाहे शारीरिक रूप से ऊपर की ओर हो या अंदर की ओर, अशांत हो गया, और मैंने बहुत ही अप्रिय समय बिताया।

'' .... मैं सोचता रहा हूँ कि निर्वाण चेतना के संपर्क में आना स्पष्ट रूप से खतरनाक जीवन है, और चिड़चिड़ेपन के इस छोटे से प्रकरण ने मेरी राय को और पुष्ट किया है। किसी भी मामले में, भौतिक तल पर निर्वाण चेतना का प्रतिबिंब भी रखना कोई मामूली तनाव नहीं है, क्योंकि इसका मतलब है कि प्रत्येक प्रभाव, चाहे बाहर से हो या अंदर से, असीम रूप से तीव्र है। जो कई लोगों के लिए एक लहर हो सकती है, वह मेरे लिए अब एक तूफान है। विभिन्न शरीर बाहरी कंपन के प्रति असीम रूप से अधिक संवेदनशील हैं, जबकि प्रत्येक शब्द, भावना, विचार, क्रिया से कहीं अधिक शक्ति से भरा हुआ है।

"........ निर्वाणिक चेतना में शक्ति की एक महान वृद्धि सम्मिलित है – शक्ति जिसका उपयोग अच्छे या बुरे के लिए किया जा सकता है। मुझे लगता है

कि यदि इसका लगातार बुराई के लिए उपयोग किया जाता है तो इसे बंद करना होगा। निर्वाण शक्ति को गलत दिशाओं में बहने देना बहुत भयावह होगा। लेकिन, इसके अतिरिक्त, मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ– कि किसी व्यक्ति को यह शक्ति सौंपना एक खतरनाक प्रयोग है, जैसा कि मुझे अपने चिड़चिड़ेपन के क्षण के संबंध में जानने का कारण है। मुझे नहीं मालूम था कि तुलनात्मक रूप से छोटे विस्फोट का प्रभाव इतना लंबा हो सकता है। जब मैं ये शब्द लिख रहा हूँ, अगले दिन दोपहर को, मैं अभी भी इसके बाद के प्रभावों से पीड़ित हूँ।

''.....मैंने ऐसा प्रतीत किया है जैसे कोई व्यक्ति अपने ही कृत्य से घर से निकाल दिया गया हो, और बाहरी ठंड में तब तक इंतजार कर रहा हो जब तक वह अपना संतुलन वापस नहीं पा लेता।

'' ..... मैं शायद यह भी जोड़ सकता हूँ कि इस क्षणिक चिड़चिड़ेपन के परिचय के प्रत्यक्ष प्रभाव सुस्ती, धारणा की तीव्रता में स्पष्ट कमी, अकथनीय शांति की भावना की हानि, शक्ति में कमी, शक्ति के सीधे, प्रत्यक्ष और भेदी होने के बजाय नष्ट होने की भावना थी। प्रकाश की चमक जो मैंने पहले ही वर्णित की है, वह फीकी पड़ गई; मुझे ऐसा लगा जैसे मैं सिकुड़ गया हूँ। मैं यह अनुभव दोबारा नहीं चाहता, और मैं इससे बचने का प्रयास करूंगा।

''एक क्षण के लिए, चिड़चिड़ाहट की अवधि के दौरान, मैं अपने केंद्र से दूर था, और परिणाम यह था – अच्छा, विनाशकारी नहीं, लेकिन कम से कम बहुत परेशान करने वाला। केंद्र से अलग होने के बाद वापस आना किसी भी तरह से आसान नहीं है। मैं प्रकाश की ओर वापस आ रहा हूँ, किन्तु मुझे एक कठोर सबक मिला है, जिसे मैं आशा करता हूँ कि मैं कभी नहीं भूलूँगा; और मैं यह सोचकर काँप उठता हूँ कि क्या होगा यदि मैं कभी भी बहुत क्रोधित हो गया या उन कमजोरियों में से किसी एक में लिप्त हो गया जो निर्वाणिक जीवन के लिए असहनीय हैं। मुझे कम से कम भौतिक शरीर की बीमारी की उम्मीद करनी चाहिए क्योंकि यह अन्यत्र बीमारी का प्रतिबिंब है यानी बाहरी संसार के लिए अपने मिशन पर आपके माध्यम से। जब तक जलने के लिए कोई मैल है, तब तक बिजली को कभी न पकड़ें। "2

संदर्भ

1. जॉर्ज एस. अरंडेल, निर्वाण, दूसरा संशोधित संस्करण टीपीएच 1927, पुनर्मुद्रित 1912, पृष्ठ XI & XII
2. वही, पृष्ठ 221–225.

अबान पटेल[2]

पारसी धर्म[3]

पारसी धर्म का नाम उनके पैगंबर जोरोस्टर से लिया गया है। उनका फारसी नाम जरथुस्त्र है जिसका अर्थ है, सुनहरा चमकता सितारा। यद्यपि, यूनानियों ने उन्हें जोरोस्टर कहा, इसलिए यही धर्म पारसी धर्म बन गया। इसे माज्दायस्नी जरथुष्त्री दीन के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि जराथुस्त्र की इस अंतिम अवतरित आत्मा के जन्म से पहले भी, लगभग 6000 साल पहले, फारसियों ने सर्वोच्च और पारलौकिक भगवान अहूर माज्दा के इस धर्म का पालन किया था। पैगंबर जरथुस्त्र के जन्म से पहले निर्दयी, अधर्मी शासकों द्वारा लोगों पर अराजकता और क्रूरता लाई गई थी। इसलिए, धरती पर शांति और स्वतंत्रता के लिए धरती माता के अनुरोध के उत्तर में, माज्दा ने जरथुस्त्र को भेजा।

जरथुष्त्र के जन्म पर, पूरी प्रकृति ने इन शब्दों के साथ खुशी मनाई–

''उष्टानो जातो अथ्रव यो स्पितमा जरथुष्त्र''। जिसका अर्थ है कि हम धन्य हैं कि पैगंबर जरथुष्त्र का जन्म हुआ।

जरथुष्त्र का जन्म पिता पौरुषस्प और माता दोघ्दो से हुआ था, जो अत्यंत प्रशंसनीय पवित्र आत्मायें थीं। ऐसा कहा जाता है कि उनके जन्म के समय उनके चेहरे पर मुस्कान थी और उनकी आभा पूरे नगर में प्रकाश फैल गई था। उनके विरोधियों को किसी तरह पता चल गया कि उनका दुश्मन आ रहा है और इसलिए उन्होंने कई बार बच्चे को मारने की कोशिश की। यद्यपि, ईश्वरीय हस्तक्षेप से उनकी जान बच गई।

जरथुष्ट्र एक युवा के रूप में गहरे ध्यान में लीन हो गए और उन्होंने दस साल पहाड़ों में एकांतवास में बिताए और जीवन की कई समस्याओं को हल करना सीखा जो लोगों को हैरान कर देती थीं। अहुर माज्दा ने उन्हें पवित्रता, ईमानदारी और सच्चाई का दिव्य संदेश दिया। और, ''हुमाता हुखत हुवराष्ट'' यानी अच्छे विचार, अच्छे शब्द और अच्छे कर्मों के सिद्धांतों का पालन करना सिखाया। यह पहला प्राचीन एकेश्वरवादी धर्म था जिसका प्रचार जरथुष्त्र ने उस समय किया जब पश्चिमी देशों के पूर्वज अपने देवताओं को मानव बलि चढ़ाते थे।

उन्होंने उपदेश दिया कि केवल एक परम सर्वोच्च, सर्वव्यापी स्रोत

2. शांति लॉज, बॉम्बे की सदस्य।
3. 24 अक्टूबर 2024 को भारतीय सेक्शन, टीएस के लिए दिया गया ऑनलाइन व्याख्यान।

और जीवन का झरना है जिसे अहुर माज्दा कहा जाता है। उन्हें छह अमेशस्पेंटास – पवित्र शास्वत (महादूत) द्वारा सहायता प्रदान की जाती है, जो उनसे निकलते हैं और प्रकृति और पशुओं के राज्यों पर शासन करने के लिए उनके गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन अमेशस्पेंटास को उनके काम में 33 यजातस (एन्जिल्स) द्वारा सहायता प्रदान की गई थी। यह पहला धर्म है जो पर्यावरण के अनुकूल था, प्रकृति की सभी रचनाओं को संरक्षित करने और उनका सम्मान करने और इसके लिए आभारी होने और इसका शोषण न करने में विश्वास करते थे, क्योंकि यह मानव जाति की हानि के लिए पारिस्थितिक संतुलन को गंभीर रूप से परेशान करेगा। यह ऐसा उपदेश भी देता है कि अशोई अर्थात न केवल शरीर और मन की पवित्रता बल्कि पर्यावरण और प्रकृति के सभी तत्वों, जैसे अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, अंतरिक्ष, पौधे जीवन और पशु जीवन की पवित्रता का भी पालन किया जाना चाहिए।

सूर्य को विशेष रूप से भगवान का सबसे सुंदर शरीर कहा जाता है जो पृथ्वी पर प्रकाश देता है। किन्तु लोगों को एक प्रतीक की आवश्यकता थी जो छोटा हो, जो उनकी महिमा यानी प्रकाश, गर्मी, ऊर्जा, जीवन शक्ति और पौरुष की याद दिलाए। इसलिए, अग्नि प्रतीक बन गया। मज्दायसनी लोगों ने मंदिरों की स्थापना की और वहाँ अग्नि की देखभाल की। इन मंदिरों को अग्नि मंदिर या अताश बेहराम के नाम से जाना जाता है। अताश अर्थात अग्नि अहुर माज्दा का सबसे आराध्य पुत्र है, जो सबसे उदार निर्माता का प्रतीक है। यह अन्य रचनाओं से गर्मी और प्रकाश उधार नहीं लेता है बल्कि इन्हें दूसरों को प्रदान करता है। प्रत्येक जोरास्ट्रियन पवित्र अग्नि को नमन करता है जो अग्नि मंदिरों या उसके घर में जलती है।

अग्नि मंदिरों में पवित्र अग्नि न केवल वेदी से प्रकाश और गर्मी देती है, बल्कि मंदिर के अंदर सर्वशक्तिमान की आभा–खुरेह है, जो अदृश्य संरक्षक देवदूत की उपस्थिति के माध्यम से चमकती रहती है। इस प्रकार हमारी श्रद्धांजलि इस गुप्त उपस्थिति के लिए है, जो भक्तों को आशीर्वाद देने के लिए है, जो अपनी भक्ति अर्पित करते हैं। अग्नि के कई अन्य पहलू हैं, यद्यपि अदृश्य लेकिन वास्तविक हैं। वे प्रत्येक परमाणु के अंदर की ऊर्जा हैं– जो हमारे महत्वपूर्ण सार को पुनः उत्पन्न करने के लिए एक बीज और एक कोशिका बनाती है– भावनाओं की आग, त्वरित निर्णय और प्रेरणा की आग, वह आग जो इच्छा–शक्ति के माध्यम से हमारे चरित्र में सभी मैल को जला देती है और वह आग जो हमारा आंतरिक प्रशिक्षक है।

जरथुस्त्र का पवित्रता, धार्मिकता, सत्य और प्रेम का संदेश संपूर्ण मानवता के लिए था। अहुर माज्दा एक, अस्तित्व का सर्वज्ञ स्रोत बने रहे। उन्होंने प्रकृति की जुड़वां शक्तियों को प्रकट किया, अर्थात, स्पेंटा मैन्यु– परोपकारी आत्मा – जीवन आयाम और अंगरा मैन्यु– विनाशकारी आत्मा या रूप–आयाम। यह हम पर निर्भर है कि हम उचित मार्ग का अनुसरण करें क्योंकि हम मनुष्यों को सोचने वाला मस्तिश्क दिया गया है, इसलिए हमारे पास चुनाव की स्वतंत्रता है। उनके त्रिगुण पहलू हैं आहु– निर्माता; वोहु मन– अच्छा मस्तिश्क– संरक्षक; और आशा वहिष्ट– पुनर्निर्माणकर्ता। जरथुस्त्र के धर्म को फारस के लोगों ने आसानी से स्वीकार नहीं किया। लेकिन जरथुस्त्र ने बहुत साहस और आत्मा की पवित्रता के साथ अपने सभी विरोधियों पर विजय प्राप्त की और अंततः राजा विष्टस्पा को मनाने में सफल रहे, जिन्होंने जरथुस्त्र के संदेश को स्वीकार किया और पारसी धर्म को राज्य धर्म बना दिया। तब से, पारसी धर्म फला–फूला। उन्होंने धार्मिकता, पवित्रता और सत्य के मार्ग का अनुसरण किया। चूँकि पारसी धर्म राजकीय धर्म था, इसलिए पुजारियों और विद्वानों को लिखने के लिए प्रोत्साहित किया गया। प्रार्थना, धर्म, विज्ञान और साहित्य पर पुस्तकें खूब छपीं। एनी बेसेंट ने पारसी धर्म पर पुस्तक में लिखा है, ''धार्मिक दर्शन और विज्ञान की शिक्षाओं से नैतिकता का विकास हुआ जो आज तक पारसी धर्म की महिमा है।''

फारस का सबसे दुर्भाग्यपूर्ण इतिहास यह है कि उनके समृद्ध पुस्तकालय पर्सिपोलिस को 329 ईसा पूर्व में ग्रीक सम्राट अलेक्जेंडर ने जला दिया था। इन पुस्तकों के केवल कुछ अवशेष ही बचे हैं। वे हैं विसपरद, यास्ना, जिसमें पाँच गाथाएँ या भजन शामिल हैं – जो स्वयं पैगंबर के मुख से निकले थे। वे हैं 'अहुनावैति', 'उष्टवैति', 'स्पेनटैमिन्य', 'वोहुक्षत्र' और 'वहीष्टोइस्ती'। सबसे पुरानी भाषा अवेस्ता है, जो अब प्रार्थना पुस्तकों को छोड़कर विलुप्त हो चुकी है। इक्कीस ग्रंथों (नस्क) में से जो चिकित्सा, खगोल विज्ञान, कृषि, वनस्पति विज्ञान, दर्शनशास्त्र – विज्ञान और कानूनों की पूरी श्रृंखला से संबंधित थे, केवल एक ही बचा। यद्यपि, पुजारियों और विद्वानों ने जो कुछ भी कर सकते थे, उसे एक साथ रखा और जीवन जारी रखा।

समय के साथ, अनेक लड़ाइयाँ जीती और हारी गईं। लेकिन यहाँ, सम्राट साइरस महान द्वारा 550 ईसा पूर्व बेबीलोन में जीती गई पहली लड़ाई और राजा यजदेजार द्वारा 640 ईस्वी में हारी गई अंतिम लड़ाई का मैं उल्लेख करूँगी।

साइरस महान अपनी दया और मानवाधिकारों के लिए जाने जाते हैं।

उनकी पहली विजय 550 ईसा पूर्व में हुई थी जब उन्होंने बेबीलोन पर विजय प्राप्त की और सभी बंदी यहूदियों को उनके वतन वापस जाने के लिए मुक्त किया और इतना ही नहीं, उन्होंने यरूशलेम में सोलोमन का मंदिर बनाने में भी उनकी मदद की। यहूदियों द्वारा उन्हें ''प्रभु का अभिषिक्त'' कहकर बहुत सम्मान दिया जाता है। आप सभी ने साइरस सिलेंडर के बारे में सुना होगा, जो ब्रिटिश संग्रहालय में है। यह एक मिट्टी का सिलेंडर है जिस पर क्यूनिफॉर्म लिपि में एक घोषणा लिखी हुई है। इसे संसार के पहले मानवाधिकार चार्टर के रूप में मान्यता प्राप्त है। इसका संयुक्त राष्ट्र की छह आधिकारिक भाषाओं में अनुवाद किया गया है और इसके प्रावधान मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा के पहले चार लेखों के समान हैं।

फारसी धरती पर लड़ी गई अंतिम लड़ाई 641 ईस्वी में राजा यजदेजार्ड ने लड़ी थी, जिसे वह अरबों के आक्रमण में हार गया था। इससे फारस के जरथ्रुष्टियों का इतिहास और भूगोल बदल गया, लेकिन उनका धर्म जरथ्रुष्टवाद नहीं बदला। अरब चाहते थे कि जरथ्रुष्टी इस्लाम को अपना धर्म स्वीकार करें या फिर उन्हें सताए जाने का सामना करें। इसलिए, अपने धर्म को बचाने के लिए, विद्वान दस्तूरों या पुजारियों ने अपने प्यारे देश को अलविदा कहने का फैसला किया और दक्षिण की ओर रवाना हो गए, एक ऐसे देश की ओर जिसके साथ उनके व्यापारिक संबंध थे, अर्थात भारत। उन्होंने फारस के पारस बंदरगाह को छोड़ दिया और इसलिए जब वे भारत में उतरे तो उन्हें पारसी के रूप में जाना जाने लगा।

अब जरथुष्टियों के जीवन में एक नया अध्याय शुरू हुआ, जिन्हें भारतीय लोग पारसी कहते थे। किंवदंती है कि 700 ई. में जब वे भारत के पश्चिमी तट पर एक छोटे से बंदरगाह पर उतरे, तो उस रियासत के प्रमुख राजा जदी राणा ने उन्हें शरण देने से इनकार कर दिया और कहा कि उनके राज्य में और लोगों को बसाने के लिए जगह नहीं है। चूंकि दोनों में से कोई भी एक–दूसरे की भाषा नहीं समझ सकता था, इसलिए भारतीय राजा ने दूध से भरा एक कटोरा दिखाया, जो यह दर्शाता था कि उनके देश में जगह नहीं है। तब विद्वान मुख्य पुजारी ने थोड़ी चीनी निकाली और दूध में डाल दी, यह संकेत देते हुए कि हम बहुत कम हैं और चीनी दूध को मीठा कर देती है, इसलिए हम आप सभी के साथ मिल जाएंगे और आपके देश को मीठा बना देंगे। राजा प्रभावित हुए और उन्होंने फारसियों को अपने धर्म के अनुसार जीने और उसका पालन करने का स्वागत किया, लेकिन कुछ शर्तों के साथ, जैसे कि गुजराती भाषा सीखना,

जो राज्य की भाषा थी, पुरुषों और महिलाओं को ड्रेस कोड बदलना चाहिए और उनके जैसे कपड़े पहनने चाहिए, और किसी को भी जोरास्ट्रियन धर्म में धर्मांतरित नहीं करना चाहिए, आदि। मुझे यह कहते हुए गर्व है कि हमने इन सभी शर्तों को पूरा किया और अपने दत्तक देश को अपना बनाया और हमेशा समृद्धि के लिए काम किया, वादे के अनुसार उनके साथ घुलमिल गए।

जरथुष्टियों ने अपनी गोद ली हुई भूमि भारत में प्रारम्भ किया। उन्हें अपने धर्म का पालन करने की स्वतंत्रता दी गई थी, इसलिए उन्होंने फारस में अपनाए जाने वाले कर्मकांडों और रीति–रिवाजों का ईमानदारी से पालन किया। उन्होंने बड़े और छोटे अग्नि मंदिर बनवाए और सभी धार्मिक प्रार्थनाओं, परंपराओं और रीति–रिवाजों का पालन किया। भारत में सबसे बड़ा अग्नि मंदिर गुजरात के एक छोटे से नगर उदवाड़ा में है, जहाँ दुनिया भर से जरथुष्टी अपनी पूजा करने और वहाँ जल रही सबसे ऊँची अग्नि से प्रार्थना करने आते हैं।

समय के साथ, उन्होंने व्यापार और उद्योग शुरू किए। उनके पड़ोसी देशों के साथ–साथ चीन के साथ भी व्यापारिक संबंध थे। टाटा हाउस ने अपनी नैतिक व्यापारिक तकनीकों से उद्योगों का एक विशाल साम्राज्य बनाया। वाडिया पहले जहाज निर्माता थे, जिनके जहाज 18वीं सदी के प्रारम्भ में संसार के महासागरों में चले थे। पेटिट्स, गोदरेज, हाउस ऑफ आर्किटेक्ट्स–शापुरजी पल्लोनजी, सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, अदार और साइरस पूनावाला और कई उद्योगपति और व्यापारिक घराने इस क्षेत्र में आए। पारसी इस कहावत पर विश्वास करते थे कि ''खुशी उन्हें मिलती है, जो दूसरों को खुश करते हैं''। इसलिए, वे अपनी संपत्ति दूसरों के साथ, खासकर समाज के निचले वर्ग के साथ साझा करते थे।

वृद्धाश्रम, लोगों के लिए अस्पताल और पशुओं के लिए कई धर्मार्थ संस्थाएँ बनाई गईं। उच्च शिक्षा के लिए स्कूल, कॉलेज जैसी शैक्षणिक संस्थाएँ भी उन्होंने शुरू कीं। इस परोपकारिता और परोपकार के कारण, कहावत प्रचलित हुई कि ''पारसी तेरा नाम दान है''। यद्यपि, समुदाय कभी भी संख्या में अन्य भारतीयों की तुलना में अधिक नहीं रहा। उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया और स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए अच्छा–खासा धन दान किया। महात्मा गांधी ने कहा था ''पारसी, संख्या में घृणा के योग्य हैं, लेकिन दान में अतुलनीय हैं''।

कोई जरथुष्टी को कैसे पहचानेगा?

प्रत्येक जरथुष्टी को सुद्रेह और कुस्ती पहननी चाहिए। एक दीक्षा समारोह होता है जिसे नवजोत कहा जाता है– जिसका अर्थ है नया प्रवेश। सात से ग्यारह वर्ष की आयु के बीच के प्रत्येक लड़की और बालक को दीक्षा–संस्कार अर्थात नवजोत से गुजरना होता है, जिसमें औपचारिक रूप से जरथुष्ट्र धर्म को अपनाया जाता है। दीक्षा प्राप्त करने वाले को पुजारी के साथ कुछ प्रार्थनाएँ करनी होती हैं। फिर बच्चे को जरथुष्टी धर्म के दो प्रतीक दिए जाते हैं। पहला है सुद्रेह, जो सफेद सूती कपड़े से बना एक बनियान है। गर्दन के सामने, गिरेबन नामक एक छोटी सी जेब होती है, जो पुण्य कर्मों के संग्रह का प्रतीक है। यह बुराइयों से लड़ने के लिए कवच का प्रतीक है। दूसरा प्रतीक है कुस्ती, जो भेड़ के ऊन से बनी एक करधनी या बेल्ट है और कमर पर बाँधा जाता है। यह शरीर का मध्य भाग है, जो प्रत्येक वस्तु में संयम और बुराइयों से लड़ने का प्रतीक है। सुद्रेह और कुस्ती एक समग्र व्यक्तित्व के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इसलिए यह अनिवार्य है कि एक जरथुष्टी को हर समय, दिन और रात 24 घंटे सातो दिन सुद्रेह और कुस्ती पहनना चाहिए और सभी पाँच गेहों में कुस्ती अनुष्ठान प्रार्थना करनी चाहिए, जो कि समयावधि है। यह प्रथा है कि प्रार्थना करते समय और प्रत्येक धार्मिक समारोह में पुरुष, महिलाएँ और बच्चे सिर को ढक कर रखते हैं।

प्राचीन भाषा में लिखी गई सभी प्रार्थनाएँ मिन्ना अर्थात विचार शक्ति और मन्थरा अर्थात ध्वनि कंपन पर आधारित हैं। खोरदेह अवेस्ता नामक दैनिक प्रार्थना पुस्तक में अहुरमज्दा की प्रचुर अभिव्यक्तियों की प्रशंसा करने वाली सभी महत्वपूर्ण प्रार्थनाएँ हैं। यद्यपि, तीन छोटी और सबसे प्रभावी प्रार्थनाएँ जैसे आहु वैर्यो, अशेम वोहु और यंगेह हातम हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे पैगंबर जरथुस्त्र के मुँह से निकले शब्द हैं। लंबी प्रार्थनाओं के सार हैं जिन्हें निरंग या कैप्सूल के रूप में जाना जाता है, जो अत्यधिक प्रभावी भी हैं।

प्रत्येक प्राकृतिक तत्व के लिए विशेष प्रार्थनाएँ हैं, अर्थात सूर्य, चंद्रमा, आकाश, तारे, वायु, जल, अग्नि। जरथुष्टी कैलेंडर में 12 महीने होते हैं, प्रत्येक महीना अमेशस्पेंटास और उनके सहायकों– यजातस का प्रतिनिधित्व करता है और महीने के प्रत्येक 30 दिनों में से प्रत्येक का नाम भी इन पवित्र अमरों का होता है। वर्ष के अंतिम पाँच दिनों को गाथा कहा जाता है। पाँच गाथाएँ दिव्य भजन हैं, जिन्हें अहुरा माज्दा और पैगंबर जरथुस्त्र के बीच की बातचीत कहा जाता है, जो प्रार्थनाओं का महत्वपूर्ण भाग है। इसके अतिरिक्त यास्ना, विसपरद और वेंडीदाद की धार्मिक प्रार्थनाएँ हैं, जिन्हें पुजारी अग्नि मंदिरों में

उच्च समारोहों या अनुष्ठानों की अवधि में पढ़ते हैं।

गेह क्या है?

एक दिन को समय अवधि के पाँच भागों में विभाजित किया जाता है और उनमें से प्रत्येक भाग गेह कहलाते हैं। वे हवन, रपीथवान, उजीरन, ऐविष्ट्रम और उशेन हैं। सूर्योदय से सूर्यास्त तक पहले तीन गेह और सूर्यास्त से अगले दिन के सूर्योदय तक अंतिम दो गेह होते हैं। गूढ़ रूप से, ये मानव आत्मा की जागृति से शुरू होकर अंततः सिद्धि प्राप्त करने की यात्रा को दर्शाते हैं। प्रत्येक जरथुष्टी परिवार प्रतिदिन दहलीज पर चूने के पाउडर और रंगों से रंगोली सजाता है। शुभ दिनों पर फूलों की मालाएँ दरवाजों को सजाती हैं और परिवार सूखे मेवों के साथ मीठी सेंवई पकाते हैं और दोस्तों और परिवार के साथ इसका आनंद लेते हैं।

पारसी मौज–मस्ती पसंद करने वाले होते हैं और अन्य समुदायों के सभी त्योहार मनाते हैं; साथ ही, वे अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णु होते हैं और इसलिए सभी उन्हें प्यार करते हैं और उनका सम्मान करते हैं।

विवाह संस्कार को भी बहुत महत्व दिया जाता है। विवाह कोई अनुबंध नहीं है, बल्कि यह दो आत्माओं का पवित्र मिलन है और इसे जीवन भर का बंधन मानने का दायित्व एक दूसरे पर है। पहले के दिनों में विवाह लड़के और लड़की की कुंडली मिलाकर किया जाता था और विवाह तय करने में माता–पिता की अहम भूमिका होती थी। किन्तु अब, दिन अलग हैं और चुनाव ज्यादातर दो व्यक्तियों द्वारा किया जाता है जो एक साथ जीवन जीने का फैसला करते हैं। लेकिन रीति–रिवाज और अनुष्ठान वही हैं। शादी के वास्तविक दिन से तीन दिन पहले, पुजारी द्वारा अग्नि मंदिर में कुछ प्रार्थनाएँ की जाती हैं, जिसमें महादूतों का आशीर्वाद मांगा जाता है। दिवंगत आत्माओं को भी इस अवसर पर आशीर्वाद देने के लिए आमंत्रित करते हुए प्रार्थना की जाती है। शादी के दिन, जब पुजारी विवाहित जोड़े को आशीर्वाद देना प्ररम्भ करते हैं, तब दुल्हन और दूल्हे के दो–दो गवाह मंच पर मौजूद होते हैं। ये प्रार्थनाएँ अधिकतर युवा जोड़े को पवित्रता, धार्मिकता और सहनशीलता का जीवन जीने का उपदेश होती हैं। पुजारी दंपत्ति को स्वस्थ जीवन, समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं और संतान वृद्धि की सलाह देते हैं। अंत में, परिवार और मित्रों द्वारा भोज, गायन और नृत्य के साथ यह समारोह समाप्त होता है।

पुजारियों को नवर कहते हैं जिसका अर्थ है नाविक। प्रत्येक धर्म के

अपने पुजारी होते हैं, जिनका कर्तव्य शास्त्रों को सीखना, धर्म के उपदेशों को सिखाना, धार्मिक अनुष्ठान करना और अपने समूह का मार्गदर्शन करना है। पारसी धर्म में पुरोहिती वंशानुगत होती है। केवल पुजारी का पुत्र ही पुजारी बन सकता है। 11 से 15 वर्ष के बीच के युवा को पुजारी बनना होता है, उसे कुछ प्रार्थनाएँ कंठस्थ करनी होती हैं। नवर को समारोह से पहले, अग्नि मंदिर परिसर में घोर एकांत में रहना होता है और सभी पाँच गेहों (देखने का समय) में निर्धारित प्रार्थनाएँ करते रहना होता है। तैयारी की अवधि लगभग 24 दिनों की होती है। नवर का अंतिम समारोह परिवार के सदस्यों और दोस्तों द्वारा देखा जाता है। यद्यपि, कुछ धार्मिक समारोहों के लिए साधक को शास्त्रों का आगे का अध्ययन करना होता है।

मृत्यु के बाद का जीवन और किया जाने वाला समारोह– जरथुष्टियों के अनुसार, मनुष्य के पास केवल एक शरीर नहीं होता है। थिऑसफी में हमने देखा है कि 7 शरीर हैं। वे 4 नश्वर शरीर हैं– (1). तनु–भौतिक, (2). केहरेप–ईथर, (3). उष्टान– महत्वपूर्ण जीवन शक्ति, (4). तेविशी – भावना। तीन अमर शरीर हैं – (1). उरुवान–कारण/अवतार लेने वाली आत्मा, (2). बोआधंग–बौद्धिक/अंतर्ज्ञान, (3). फ्रावाशी– मोनाड/दिव्य चिंगारी। यह अवतार नहीं लेता, बल्कि एक संरक्षक देवदूत के रूप में रहता है, जिसे फरोहर के नाम से भी जाना जाता है।

मृत्यु के समय तनु (भौतिक शरीर) के साथ–साथ कहरेप (ईथरिक डबल) और उष्टान (प्राणिक जीवन शक्ति) शरीर को छोड़ देते हैं और सूर्य में वापस चले जाते हैं। शरीर को साफ करके नहलाया जाता है, उसे साफ सफेद कपड़ों में लपेटा जाता है और सुद्रेह और कुस्ती (चेहरा खुला रखते हुए) के साथ एक तरफ रख दिया जाता है, जहाँ कुछ प्रार्थनाएँ/अनुष्ठान किए जाते हैं। दो पुजारी पहली गाथा अहुनवैति की प्रार्थना करते हैं, जो आत्मा को इस दुनिया की माया और इच्छाओं से अलग करने में बहुत प्रभावी है। फिर शरीर को खुले में टॉवर ऑफ साइलेंस में भेज दिया जाता है ताकि शिकारी पक्षी और सबसे महत्वपूर्ण बात, सूरज की रोशनी और हवा जितनी जल्दी हो सके विघटन का काम कर सकें। तीनों दिन प्रार्थना और अनुष्ठान किए जाते हैं और चौथे दिन सुबह पुजारी द्वारा उच्च धार्मिक प्रार्थना की जाती है, क्योंकि आत्मा विभाजक (चिनवत पूल) के पुल पर पहुँचती है, जहाँ महादूत सरोश अपने सहायक रश्नु के साथ पृथ्वी पर किए गए कर्मों का वजन करते हैं और उसके अनुसार आगे की यात्रा तय की जाती है।

उनके निधन के पहले वर्ष की अवधि में दिवंगत आत्माओं के लिए कई प्रार्थनाएँ और अनुष्ठान किए जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि दिवंगत आत्माएँ सामूहिक रूप से पारसी कैलेंडर के अंतिम दस दिनों के दौरान विशेष प्रार्थनाओं में भाग लेती हैं, जिन्हें मुक्ताद कहा जाता है। इन दिनों के दौरान फूल और धूप चढ़ाए जाते हैं और परिवार द्वारा प्रार्थना की जाती है दिवंगत आत्मा के परिवार के सदस्य, साथ ही अग्नि मंदिरों में पुजारी। ऐसा कहा जाता है कि ये आत्माएँ बहुत खुश होती हैं कि उन्हें याद किया जाता है और बदले में वे उन्हें आशीर्वाद देते हैं।

फरोहर का जरथुष्टी प्रतीक

यह पवित्र प्रतीक है और मंदिरों या किसी भी पवित्र स्थान के अग्रभाग पर व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। वास्तुकला में एक पंख वाले पक्षी के रूप में चित्रित, आत्मा, दिव्य चिंगारी, ख्मोनाड, है, जो अवतार नहीं लेती है, लेकिन एक संरक्षक–देवदूत के रूप में रहती है। यह इच्छाशक्ति, दृढ़ संकल्प और नियोजन क्षमता का केंद्र है। दाहिना हाथ आशा के मार्ग को इंगित करता है– सद्भाव और शांति का सही संतुलन। बाएं हाथ में एक अंगूठी है, जो गोलाकार है, जिसका न तो कोई आरंभ है और न ही अंत जो शाश्वत है। और अंत में, पंख – वह मार्ग जिसने ऊंची उड़ान भरने या बढ़ने की इच्छा जताई।

थिऑसफी के प्रकाश में पारसी धर्म

थियोसोफिकल शिक्षाओं के अनुसार, लाखों साल पहले, ज्वाला के स्वामी शुक्र से आए और आंतरिक सरकार का एक पदानुक्रम स्थापित किया जो सभी धर्मों पर शासन करता है। तीसरी आर्य उप–जाति में मानवता के महान शिक्षक जरथुस्त्र आए। वे ईरानी उप–जाति के प्रारम्भ में एक पैगंबर के रूप में आए। उनके जन्म की तिथि के बारे में बहुत अस्पष्टता है। यद्यपि, उनके शिक्षकों की 7वीं पंक्ति होनें के कारण, नियत तिथि 7000 ईसा पूर्व मानी जाती है।

विकास के साथ सृष्टि का सिद्धांत–

छह घंबर हैं, यानी वे कालखंड, जिनकी अवधि में संपूर्ण ब्रह्मांड अस्तित्व में आया। वे हैं–

1. माएदियोजारेम – वह कालखंड, जिसमें स्वर्गीय छत्र का निर्माण हुआ,
2. माएदियोशाहेम– वह कालखंड, जिसमें भाप उगलते बादलों से पानी निकला,
3. पैतिशाहेम – वह कालखंड, जिसमें पृथ्वी ब्रह्मांडीय परमाणुओं से एकीकृत हुई,

4. इयाथ्रेम – वह कालखंड, जिसमें पृथ्वी ने वनस्पति को जन्म दिया,
5. माएदियारेम – वह कालखंड, जिसमें वनस्पति से पशु जीवन का विकास हुआ; और
6. हेमस्पिथैमेडेम – वह काल जिसमें पशु जीवन का समापन मनुष्य में हुआ, जिसमें चेतना और बुद्धि का पूर्ण विकास हुआ।

इन कालखंडों को मनाने के लिए, कुछ दिनों में, जोरास्ट्रियन कैलेंडर के अनुसार अग्नि मंदिरों में विशेष प्रार्थना की जाती है और समाज के सभी वर्गों के लोग, अमीर और गरीब, युवा और बूढ़े, एक साथ बैठकर भोज में भाग लेते हैं, सभी के साथ सौहार्द दिखाते हैं।

कर्नल एच.एस. ऑलकॉट ने 1882 में बॉम्बे में जोरोस्ट्रियन धर्म पर कई व्याख्यान दिए। उन्होंने कहा– ''जोरास्ट्रियन धर्म में, पारसी को अंधेरे की बुरी आत्माओं की शक्तियों से बचने और उनसे लड़ने के लिए उतनी ही सावधानी से सिखाया जाता है, जितना कि प्रकृति के अच्छे सिद्धांतों के साथ घनिष्ठता विकसित करना और उनकी रक्षा करना।''

इस चर्चा से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यदि गहराई से अध्ययन किया जाए तो जोरास्ट्रियन धर्म में थिऑसफी और विज्ञान के अध्ययन के साथ अनेक समानताएँ मिलेंगी। अब मैं एक किस्से के साथ अपनी बात समाप्त करना चाहूँगी जो मैंने कुछ साल पहले मुंबई में भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र में काम करने वाले एक वैज्ञानिक के व्याख्यान में सुना था, जो पारसी धर्म के एक विद्वान और एक नियुक्त पुजारी भी थे – जिनका नाम डॉ. मिनोचर कारखानावाला था। उन्होंने कहा–

"जब मैं छोटा था, तो मुझे बड़ों ने बताया था कि हमारा धर्म विज्ञान पर आधारित है। लेकिन जैसे–जैसे मैं बड़ा हुआ और विज्ञान का विस्तार से अध्ययन किया, मुझे आभास हुआ कि विज्ञान मेरे धर्म– पारसी धर्म पर आधारित है।"

ग्रंथ सूची–

1. 'जरथुस्त्र का संदेश'– पारसी धर्म की एक पुस्तिका, दस्तूर खुर्शीद दाबू द्वारा।
2. थिऑसफिकल अध्ययन के लिए वर्चुअल सेंटर।
3. डॉ. एनी बेसेंट द्वारा 'पारसी धर्म और सात महान धर्म'।
4. बेहराम डी. पिथावाला द्वारा 'दिव्य के साथ मुलाकात'।

समाचार और टिप्पणियां

असम

असम थिऑसफिकल फेडरेशन का 47वां स्थापना दिवस 17 फरवरी 2025 को अड्यार दिवस के साथ मनाया गया। बहन बीना हजारिका ने बैठक की अध्यक्षता की। श्रोताओं में से बन्धु किरण चंद्र बुरागोहेन, बहन अरुणिमा बरुआ और बहन पुष्पलता मजूमदार ने इस अवसर पर चर्चायें की। एटीएफ के अंतर्गत विभिन्न लॉजों ने भी इन दिनों को उचित सम्मान के साथ मनाया।

लक्ष्य निर्धारण बैठक– डॉ. बिपुल सर्मा, डॉ. चंद्र प्रवाह भुयन और बन्धु रमेश महंत ने 23 अक्टूबर 2024 को भारतीय सेक्शन मुख्यालय, वाराणसी में भारतीय सेक्शन द्वारा आहूत सभी फेडरेशनों के अध्यक्षों और सचिवों की लक्ष्य निर्धारण बैठक में भाग लिया। इस बैठक में थिऑसोफिकल वर्ष 2024–2025 के अंदर प्राप्त किए जाने वाले लक्ष्यों की रूपरेखा तैयार की गई। असम थिऑसफिकल फेडरेशन ने भी अपने लक्ष्यों को उसी के अनुसार निर्धारित किया। एटीएफ के सचिव बन्धु रमेश महंत ने फेडरेशन के अंतर्गत आने वाले सभी लॉजों के अध्यक्षों और सचिवों को आंतरिक संचार के माध्यम से लक्ष्य बताए। लॉज समन्वय समितियों ने इन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए उचित पहल की।

अपर असम लॉज समन्वय समिति ने 26 मार्च 2025 को जोरहट के सलादहारा सर्वजनिन पूजा मंदिर परिसर में एक लक्ष्य निर्धारण बैठक आयोजित की। डॉ. बिपुल सर्मा की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में निर्धारित लक्ष्यों के आलोक में लॉज और फेडरेशन दोनों स्तरों पर थिऑसोफिकल गतिविधियों को बढ़ाने पर जोर दिया गया।

गुवाहाटी लॉज समन्वय समिति की एक और लक्ष्य निर्धारण बैठक 29 मार्च 2025 को एटीएफ मुख्यालय में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए डॉ. चंद्र प्रवाह भूयन ने भाग लेने वाले लॉज अध्यक्षों और सचिवों से समाज में थिऑसफी के प्रचार–प्रसार के लिए सुझाव आमंत्रित किए। बैठक में राज्य में थिऑसफी की बाहरी पहुंच के लिए प्रभावी रणनीतियों पर गहन चर्चा की गई।

स्मारक व्याख्यान और अध्ययन वर्ग–

प्रागज्योतिषपुर थिऑसफिकल लॉज, गुवाहाटी ने 12 मार्च 2025 को "किरोन हॉल" में प्रथम रघुनाथ चौधरी स्मारक व्याख्यान का आयोजन किया। मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेते हुए, डॉ. बिपुल सर्मा, राष्ट्रीय वक्ता, भारतीय सेक्शन ने "दान का आनंद" विषय पर मुख्य व्याख्यान दिया। पंजाबी लॉज, गुवाहाटी ने 9 अप्रैल 2025 को बाघरबारी असमिया महिला समिति परिसर में एक अध्ययन सत्र का आयोजन किया। अध्ययन का संचालन करते हुए, डॉ. चंद्र प्रवाह भूयन ने "मृत्यु के बाद जीवन का रहस्य" विषय पर एक बहुमूल्य व्याख्यान दिया।

युवाओं के लिए थिऑसफी का प्रचार–

डेरगांव थियोसोफिकल लॉज, एटीएफ ने 9 अप्रैल 2025 को इंद्राणी देवी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, डेरगांव में कक्षा 10 और 11 के छात्रों के लिए "चरित्र निर्माण" विषय पर एक युवा प्रचार कार्यक्रम का आयोजन किया। निर्धारित वक्ता बन्धु प्रभात चंद्र महंत और बन्धु सुरेंद्र मोहन हजारिका ने उपरोक्त विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. बिपुल सर्मा ने विशेष अतिथि के रूप में इस समारोह की शोभा बढ़ाई।

बाम्बे

अप्रैल 2025 में बंबई में भाईचारा, मानवता, मूल्यों और ज्ञान के लिए थियो–ज्योति समाचार चैनल 'जल्द ही आ रहा है' घोषणा वीडियो बन्धु तरल मुंशी के साथ हिंदी में और बन्धु शिखर अग्निहोत्री के साथ अंग्रेजी में दिखाया गया।

शुक्रवार 28 मार्च 2025 को, बहन अबान पटेल ने 'स्प्रिंग इन द ऑटम ऑफ डेथ ' पुस्तक का अध्ययन शुरू किया। बहन अबान पटेल द्वारा किए गए हाइब्रिड अध्ययन में यूएसए, कनाडा और अफ्रीका के टीएस सदस्य शामिल होते हैं। यहां तक कि बन्धु खुसरो पावरी, जो अपनी विकलांगता के कारण शारीरिक बैठकों में शामिल नहीं हो सकते, शुक्रवार हाइब्रिड बैठकों का अधीरता से प्रतीक्षा करते हैं। पुस्तक 'स्प्रिंग इन द ऑटम ऑफ डेथ' डॉ. उषा अरुण चतुर्वेदी द्वारा लिखी गई है, जो 13 वर्षीय प्यारी बेटी स्तुति के माता–पिता श्री अरुण चतुर्वेदी द्वारा प्राप्त दर्शनों पर आधारित है, जो उनकी बेटी स्तुति की दिवंगत आत्मा से संदेश प्राप्त करने के वास्तविक जीवन के

अनुभव के बारे में है।

ब्लावात्स्की लॉज में मैडम एचपीबी की 134वीं पुण्यतिथि के अवसर पर व्हाइट लोटस डे मीटिंग का प्रारम्भ सभी धर्मों की प्रार्थनाओं के पाठ के साथ हुई। बीटीएफ के अध्यक्ष बन्धु विनायक पंड्या ने मैडम ब्लैवैत्स्की के योगदान और दुनिया को दी गई शिक्षाओं के बारे में बात की। ब्लैवैत्स्की लॉज की अध्यक्ष बहन कश्मीरा खंबाता ने इस दिवस के महत्व पर बात की। तीन प्रस्तुतियां बहन मेहरांगिज बारिया, बहन रूबी खान और बन्धु तरल मुंशी ने की। बहन अर्चना मुंशी ने अष्टांगिक मार्ग पर बात की और बन्धु अनिल कुमार देशपांडे ने मैडम ब्लैवैत्स्की के बहुमुखी जीवन की झलकियां दीं और रीडिंग के लिए उनकी इच्छा जताई।

वेसाख पूर्णिमा समारोह बैठक– 12 मई 2025 को सदस्य गण भगवान बुद्ध की प्रतिमा के पास ब्लैवैत्स्की लॉज के ग्रीन रूम में एकत्र हुए थे, जिस पर बहन आशा म्हात्रे द्वारा ऑल्टर टेबल के नीचे रंगोली बनाई गई और बहन नवाज ढल्ला द्वारा फूलों की सजावट की गई थी। बैठक का प्रारम्भ बहन मेहरंगीज बारिया की अगुवाई में बौद्ध प्रार्थना से हुई, जिसके बाद ब्लैवैत्स्की लॉज की अध्यक्ष बहन कश्मीरा खंबाता ने सीडब्ल्यूएल द्वारा 'द मास्टर्स एंड द पाथ' से भगवान बुद्ध के जीवन की प्रमुख विशेषताओं और वेशाख समारोह पर पावर प्वाइंट पर प्रकाश डाला। 'सबसे महान आशीर्वाद' के पाठ के बाद 'ओम मणि पद्मे हुम' का जाप किया गया। उपाध्यक्ष बन्धु नवीन कुमार ने भगवान बुद्ध के जीवन के कम ज्ञात पहलुओं को साझा किया। बैठक का समापन पवित्र जल के सेवन के साथ हुआ।

थियो–ज्योति समाचार चैनल 20 मई 2025 को त्रिवेणी मंगलवार की बैठक में लॉन्च किया गया। बन्धु तरल मुंशी का सपना था कि वे थिऑसफिकल लॉज, फेडरेशन, भारतीय सेक्शन, टीएस अड्यार और भारत से परे भी भाइयों को थियोसोफिकल कार्यक्रमों और विचारों को साझा करके भाईचारे को मजबूत करें और मानवता, मूल्यों और ज्ञान का प्रसार करें। भारतीय अनुभाग के अध्यक्ष श्री प्रदीप गोहिल ने थियो–ज्योति समाचार चौनल के शुभारंभ की घोषणा की थी। अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष बन्धु टिम बॉयड और संसार के प्रमुख थिऑसफिस्टों से वीडियो शुभकामनाएं प्राप्त हुईं। इसे बहन उर्वी अजय होरा के आशीर्वाद से लॉन्च किया गया। बीटीएफ के अध्यक्ष बन्धु विनायक पांड्या ने बन्धु तरल मुंशी को उनके द्वारा की गई पहल के लिए

बधाई दी। समाचार का विमोचन व्हाइट लोटस डे के अवसर पर ब्लैवैत्स्की लॉज, मुंबई में हुआ। टीएस अड्यार समाचार वीडियो के साथ बहन कैटलिना और बन्धु शिखर अग्निहोत्री द्वारा साझा किए गए। मराठी टी.एफ. और असम टी.एफ. के समाचार भी साझा किए गए।

दिल्ली

आत्मा के सिद्धांत का विषय एक अध्ययन के रूप में क्लिष्ट है और थिऑसफी पर अनेक पुस्तकों से परिप्रेक्ष्य जानने से बौद्धिक विकास व्यापक होता है जब शंकर लॉज की बैठकों में दिए गए अनेक व्याख्यानों की अवधि में गहन चिंतन किया जाता है।

इसका प्रारम्भ भगवान, उच्चतर स्व को जानने और मनुष्य में जीवात्मा के अवतरण के साथ हुई, बन्धु यू एस पांडे द्वारा दिए गए दो व्याख्यानों में 'मनुष्यात्मा, ईश्वर और देवताओं का ज्ञान' जो क्रमशः 3 और 31 मई 2025 को आयोजित किए गए थे।

क्या मस्तिष्क के अंदर मन है और यह मस्तिष्क सोचता है या मन सोचता है और मस्तिष्क से संबंधित नहीं है बल्कि भौतिक निकायों का एक उच्च भाग है, यह प्रतिबिंबित करने का अगला चरण है। फिर मनुष्य को अलग करना, उसके भौतिक मस्तिष्क और कार्यात्मक मन का अध्ययन करना बहन मानसी भगत और बन्धु राजीव गुप्ता के साथ शंकर लॉज की बैठक में जारी रहा। 10 मई को की गई इस शोध अध्ययन का विषय था 'क्या मन और मस्तिष्क एक ही हैं?'।

राष्ट्रीय वक्ता बन्धु एस के पांडे ने 17 मई को 'स्वयं को जानना' विषय पर अपने ऑनलाइन व्याख्यान में जीवन यात्रा की अवधि में प्रकृति में कर्म के नियमों के आगे के विस्तार पर विस्तृत चर्चा की।

अंत में, भक्ति की शक्ति जिसके साथ मनुष्य के विकास में आरोहण विकास में एक महान कदम है, व्यावहारिक जीवन में बाबा नीम करोली द्वारा प्रेम की शक्ति के रूप में सबसे अच्छी तरह से सिखाया जाता है। भक्ति की गुणवत्ता को परिष्कृत करने के साथ मन का यह विस्तार जो सभी मनुष्यों के लिए संभव है और थिऑसफी की शिक्षाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन राष्ट्रीय व्याख्याता डॉ राजीव गुप्ता ने 25 मई को 'भक्ति की शक्ति – नीम करोली बाबा' पर अपने व्याख्यान में विस्तार से किया।

गुजरात

जीटीएफ के प्रचार कार्यक्रम के तहत, अध्यक्ष और राष्ट्रीय व्याख्याता श्री हर्षवर्धन एम शेठ ने जीटीएफ सचिव श्री सी.के. सोनी और कार्यकारी समिति के सभी सदस्यों के साथ 26 अप्रैल से 30 अप्रैल, 2025 तक बैंगलोर सिटी लॉज में एक अध्ययन शिविर का आयोजन किया। जीटीएफ के विभिन्न लॉजों से उन्तीस प्रतिनिधियों ने भी इसमें भाग लिया।

अध्ययन के लिए मैडम ब्लैवैत्स्की द्वारा लिखित द सीक्रेट डॉक्ट्रिन का गुजराती संस्करण 'रहस्य ज्ञान संहिता' पुस्तक का उपयोग किया गया।

कर्नाटक फेडरेशन के अध्यक्ष श्री पी.एस. वेंकटेश बाबू, उपाध्यक्ष श्री सनत कुमार, सचिव श्री श्रीनिवास गुप्त, कोषाध्यक्ष श्री संतोष और कर्नाटक महासंघ के सभी सक्रिय सदस्यों ने उत्साहपूर्वक मदद की और सहयोग किया। सभी ने अध्ययन शिविर के उद्घाटन और समापन समारोह में सक्रिय रूप से भाग लिया।

जीटीएफ प्रतिनिधियों को आरामदायक आवास और बहुत स्वादिष्ट दक्षिण भारतीय व्यंजन उपलब्ध कराए गए थे। सभी ने अपने प्रवास का आनंद लिया। उन्होंने बैंगलोर सिटी लॉज के सदस्यों के साथ प्रातः भारत समाज पूजा में भाग लिया।

अध्ययन शिविर का संचालन जीटीएफ अध्यक्ष और राष्ट्रीय वक्ता श्री हर्षवर्धन शेठ ने जीटीएफ उपाध्यक्ष और राष्ट्रीय वक्ता बन्धु नरसिंह ठाकरिया के साथ किया। जीटीएफ सचिव श्री सी.के. सोनी ने पुस्तक के परिचयात्मक भाग को चित्रित किया। श्री नरसिंह ठाकरिया ने ब्रह्मांडजनन की कुछ विशेषताओं के बारे में बात की। जीटीएफ कोषाध्यक्ष श्री रमेशचंद्र डोलिया ने भी प्रतीकात्मक पहलुओं के बारे में बताया। प्रतिभागी भी सक्रिय थे। उन्होंने प्रश्न–उत्तर सत्रों में भाग लिया। पूरे अध्ययन शिविर का प्रभावी ढंग से संचालन जीटीएफ अध्यक्ष बन्धु हर्षवर्धन शेठ ने किया, जिन्होंने मानवजनन के भाग को समझाया और चित्रित किया।

जीटीएफ द्वारा आयोजित यह अध्ययन शिविर एक बड़ी सफलता थी। बन्धु सनत कुमार ने सुझाव दिया कि अन्य फेडरेशनों को भी ऐसा करना चाहिए और इस तरह के और भी शिविरों का आयोजन यहां बैंगलोर सिटी लॉज में किया जाएगा। उन्होंने निकट भविष्य में गुजरात की यात्रा करने की भी इच्छा

जताई। बन्धु हर्षवर्धन शेठ ने अपनी भक्ति और कृतज्ञता व्यक्त की क्योंकि यह अनूठा अध्ययन शिविर उनके और सभी के लिए एक 'सपना सच होने' वाला आयोजन था।

शिविर की समयावधि में प्रतिनिधियों ने कुछ दिलचस्प स्थानों जैसे आदि–योगी केंद्र, मैसूर पैलेस, वृंदावन गार्डन और प्रसिद्ध मंदिरों का भी दौरा किया।

मराठी

सांगली लॉज के अध्यक्ष बन्धु आर.सी. माली ने राष्ट्रीय व्याख्याता बन्धु एन.एन. राउत को सांगली लॉज में आमंत्रित किया, जहां 11 मई, 2025 को जे. कृष्णमूर्ति की 130वीं जयंती मनाई जानी थी। तदनुसार, बन्धु राउत प्रातः वहां पहुंचे। इस अवसर पर सांगली लॉज के साथ–साथ मीरज लॉज के लगभग 23 सदस्य भी वहां उपस्थित थे।

बन्धु आर.सी. माली और बन्धु मीरजकर ने सुबह के सत्र में "भारत समाज पूजा" की। पूजा के बाद बन्धु मीरजकर ने "जे कृष्णमूर्ति के जीवन" के बारे में विस्तार से चर्चा की। फिर बन्धु माली ने "थिऑसफी के मूल सिद्धांतों" के बारे में बताया।

बन्धु एन.एन. राउत ने दोपहर के सत्र में दो विषयों पर बात की, एक "आत्मा पर ध्यान" और दूसरी बातचीत "दैनिक जीवन में थिऑसफी" पर थी। इसके बाद प्रश्न–उत्तर सत्र हुआ। कार्यक्रम का समापन "पसायदान" प्रार्थना के साथ हुआ।

उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड

धर्म लॉज, लखनऊ में 8 मई 2025 को श्वेत कमल दिवस मनाया गया। इसके अतिरिक्त, बन्धु यू.एस. पांडे ने 14 मई को वहां 'वैसाख पूर्णिमा का महत्व' के बारे में बताया। 21 मई को बन्धु अतुलेश जिंदल के व्याख्यान का विषय 'ध्यान' था। बन्धु प्रमिल द्विवेदी ने 28 मई को 'कुछ मानव अंगों के गुप्त कार्यों' के बारे में बताया।

बहन वसुमती अग्नहोत्री ने प्रज्ञा लॉज में निम्नलिखित तीन व्याख्यान 'भारत समाज पूजा अनुष्ठान और उसका विज्ञान', 'धर्मपद– 1' और 'धम्मपद– 2' पर दिए और ये व्याख्यान क्रमशः 4, 11 और 18 मई को आयोजित किए

गए। इसके अतिरिक्त, लॉज द्वारा 8 मई को श्वेत कमल दिवस मनाया गया।

बन्धु जी.एन. पांडे ने 25 मई को सत्यमार्ग लॉज लखनऊ में एक व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने 'नचिकेता–यमराज संवाद' के बारे में चर्चा की।

बन्धु हरीष शर्मा ने 1 मई को निर्वाण लॉज, आगरा में 'प्रकृति' पर एक व्याख्यान दिया। उनका दूसरा व्याख्यान 15 मई को हुआ जिसमें उन्होंने 'अहंकार' के बारे में बात की। फिर बन्धु देवेंद्र बाजपेयी ने 28 मई को 'हनुमान' पर एक व्याख्यान दिया। इसके अतिरिक्त लॉज द्वारा 8 मई को श्वेत कमल दिवस मनाया गया और 29 मई को 'कर्म' पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

बन्धु आर.पी. सिंह ने 14 मई को सर्वहितकारी लॉज, गोरखपुर में 'सनातन धर्म' पर एक व्याख्यान दिया। 21 मई को बन्धु ए.पी. श्रीवास्तव ने 'पतंजलि योग दर्शन' की व्याख्या की। 28 मई को बन्धु अजय राय के व्याख्यान का विषय था 'चेतना का विस्तार'।

3 मई को जोगिया–सत्यदर्शन लॉज में बन्धु एस.बी.आर. मिश्र ने 'मैं कौन हूं' विषय पर व्याख्यान दिया।

इसके अतिरिक्त 11 मई को सनातन धर्म लॉज में बन्धु मिश्रा ने 'ब्रह्मविद्या क्या है' के बारे में बताया। 31 मई को जिगना–ब्रह्मविद्या लॉज में बन्धु वशिष्ठ मुनि त्रिपाठी के व्याख्यान का विषय था 'गुरु'। 31 मई को देवरिया के गोरखनाथ ब्रह्मविद्या लॉज में बन्धु श्रीकांतमणि त्रिपाठी ने 'भगवद्गीता की शिक्षा' विषय पर व्याख्यान दिया।

कानपुर के चौहान लॉज में बन्धु शिवबरन सिंह चौहान ने 4 मई को 'भावना जगत' के बारे में व्याख्यान दिया। एसएस गौतम द्वारा वहां दो सत्रों में आयोजित व्याख्यान का विषय 'अदृश्य संसार' था, जो क्रमशः 11 और 25 मई को दिया गया। इसके अतिरिक्त, लॉज द्वारा 8 मई को व्हाइट लोटस डे मनाया गया।

4 मई को नोएडा लॉज में 'श्वेत कमल दिवस का महत्व' विषय पर एक वार्ता आयोजित की गई तथा 18 मई को वहां 'विवेक चूड़ामणि' पुस्तक का सामूहिक अध्ययन किया गया।

बहन सुब्रलिना मोहंती ने प्रयास लॉज, गाजियाबाद में 'श्वेत कमल

दिवस का महत्व' समझाया।

वाराणसी में एनी बेसेंट लॉज में बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर 'कृष्णमूर्ति पर बुद्ध का प्रभाव; समानताएं, विचलन और आध्यात्मिक विरासत' विषय पर एक वार्ता आयोजित की गई। यह वार्ता श्री गोवर्ट शूलर द्वारा दी गई।

बहन सुषमा श्रीवास्तव ने 'सात मानवीय स्वभाव' तथा 'मानवता के लिए एचपीबी का योगदान' विषयों पर क्रमशः 4 और 8 मई को आनंद लॉज, प्रयागराज में वार्तायें आयोजित की गईं।

छात्रों / बच्चों / युवाओं के लिए कार्यक्रम–

बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा ने 10 मई को जे.पी. नर्सिंग कॉलेज, कुसुम्ही (गोरखपुर के पास) में 'चरित्र निर्माण' पर व्याख्यान दिया। 12 मई को वाराणसी के वी.के.एम. के विद्यार्थियों के लिए मूल्यवर्धित कार्यक्रम के तत्वावधान में बन्धु एस.के. पांडेय ने 'आत्म–साक्षात्कार' पर ऑनलाइन व्याख्यान दिया।

अन्य संघों में–

बहन विभा सक्सेना द्वारा मराठी संघ के आयोजन में 5 मई को पुस्तक लाइट ऑन द पाथ का ऑनलाइन अध्ययन कराया गया। बहन सुषमा श्रीवास्तव द्वारा 'अनुग्रह और आत्मनिर्भरता के प्रयास का विरोधाभास' विषय पर 19 मई को बरबटी लॉज, उत्कल संघ के तत्वावधान में ऑनलाइन चर्चा की गई।

भारतीय अनुभाग कार्यक्रम–

बहन सुव्रलिना मोहंती ने 11 और 18 मई को क्रमशः दो सत्रों में पुस्तक 'प्रैक्टिकल ऑकल्टिज्म' का ऑनलाइन अध्ययन कराया। अध्ययन के बाद समूह चर्चा हुई। फिर, बहन सुव्रलीना ने 30 मई को 'महात्मा पत्र' का अध्ययन कराया।

टीएस अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय, अड्यार में–

बन्धु शिखर अग्निहोत्री ने 21 मई को अड्यार में आयोजित कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर की अवधि में एक व्याख्यान दिया। उनके व्याख्यान का विषय था 'थियोसोफी के मूल सिद्धांतों पर पुनर्विचार'।

शांति प्राप्त–

कानपुर के चौहान लॉज के बन्धु राम लखन गुप्ता (डिप्लोमा संख्या 48081) का 17 मई को निधन हो गया।

मराठी थियोसोफिकल फेडरेशन ने थिऑसफिकल सोसायटी की 150वीं वर्षगांठ मनाने का फैसला किया है।

इस संबंध में, फेडरेशन पूरे विश्व में थिऑसफिकल सोसायटी के सभी सदस्यों को 'विश्वबंधुत्व' के विशेष अंग्रेजी संस्करण के लिए लेख लिखने के लिए आमंत्रित कर रहा है। संघ ने इस पत्रिका 'विश्वबंधुत्व ' का एक विशेष अंक प्रकाशित करने का निर्णय लिया है, जिसमें केवल अंग्रेजी में लिखित लेखों को संकलित किया जाएगा' विषय– "थिऑसफी और मैं"। आपके लेख में नीचे दिये गये संकेतों के अनुसार "थिऑसफी और मैं" विषय से संबंधित कुछ भी हो सकता है–

1. थिऑसफिकल शिक्षाओं में आपको सबसे अधिक पसंद आने वाला विषय।
2. टीएस में आपके अध्ययन की यात्रा।
3. थिऑसफी का अध्ययन करते समय आपका अनुभव।
4. टीएस में कार्यालय प्रशासनिक कार्य के दौरान आपका अनुभव।
5. टीएस का सदस्य होने का आपके लिए क्या अर्थ है।
6. थियोसोफी के नए विद्यार्थियों के लिए आपके सुझाव।
7. टीएस लॉज की बैठकों या वार्षिक समारोहों में आपकी भागीदारी।
8. "थियोसोफी और मैं" से संबंधित कोई भी अभिव्यक्ति और विचार।

नोट–

’लेखन का माध्यम– केवल अंग्रेजी

’लिखित लेख की सीमा– 1000 शब्द

’एक व्यक्ति द्वारा केवल एक लिखित लेख

’लेख आपकी सुविधाजनक भाषा में लिखा जा सकता है और फिर अंग्रेजी में अनुवादित किया जा सकता है

’लिखित लेख टाइप किया जा सकता है या हाथ से लिखा जा सकता है। (टाइम्स न्यू रोमन में टाइप करें, फॉन्ट– 14)

’रिकॉर्ड किया गया ऑडियो–भाषण 15 मिनट की अवधि के अंदर अंग्रेजी में भेजा जा सकता है (यदि आप लिखित लेख भेजना पसंद नहीं करते हैं)।

’लेखों या ऑडियो की पीडीएफ फाइल या स्कैन की गई फोटो व्हाट्सएप नंबर पर भेजी जानी चाहिए– 91 9823724377 / 91 7083945799 या ईमेल– उजचिनदम918 / हउंपस.बवउ

सबमिशन की अंतिम तिथि– 15 सितंबर 2025

”आइए हम सब मिलकर जश्न मनाएं!!!“ (विश्वबंधुत्व

का अर्थ है सार्वभौमिक भाईचारा)